om 8 initial_Page 1 and 2 10-07-2014 21:34 Page 5

आकर्षण बनाम प्रेम

पिछले भाग में आपने जाना कि कैसे इच्छाओं को पहचानें, कैसे ढूंढ़ें उस फीलिंग या इमोशन (भावना) को जो हमारे हित में हो या फिर दूसरों के हित में, उसे करो। यदि उसकी फीलिंग बुरी है,तो भी करो यदि वह आपके लिए अच्छा है। अब इसके थोड़ा आगे बढ़ते हैं कि क्या मांगने से या law of attraction की पावर के प्रयोग से कुछ मिलता है? कहने का अर्थ बिल्कुल साफ है कि, हम कार्य को करने की इच्छा से करते हैं, या काम समझ करते हैं या फिर उसे प्यार करते हैं।

मांगना vs योग्यता:- एक होता है मांगो, क्या मांगने से सबकुछ मिलता है? यदि मान लो कि आप किसी कंपनी के C.E.O. हो, एक सीट प्रोमोशन के लिए खाली है और प्रोमोशन लिस्ट में दस लोग हैं तो आप किसे उन्नति देंगे, उसे जो बार-बार आकर कहता है कि सर ज़रा देख लेना, हो सके तो कर देना। दूसरा, उसे जो आकर्षण के सिद्धान्त को प्रयोग में ला रहा है या फिर उसे जो ज़्यादा योग्यता रखता है। निश्चित रूप से जो ज़्यादा योग्यता रखता है उसे ही आप प्रोमोशन या प्रोन्नति देंगे। ये तो हम सबकी बात है, जो परिस्थितियों के आधार पर थोड़ा unfair भी हो सकते हैं, परन्तु भगवान जैसा C.E.O. हो तो वह कैसे गलत कर सकता है, वो तो बिल्कुल ही निष्पक्ष व्यवहार करेगा। इसलिए वो उसे ही देता है जो योग्य है। तो क्या करना है, अपने आप को योग्य बनाना है। जो भी लोग law of attraction के पावर की बात कर रहे हैं, वे कह बिल्कुल ठीक रहे हैं, लेकिन example गलत दे रहे हैं।

आकर्षण का सिद्धांत कहता है, you do not get what you want, you get what you are, अर्थात आप वो प्राप्त नहीं करते जो आप चाहते हो, आप वो प्राप्त करते हो, जो आप हो। क्या हैं आप? इस प्रशन का उत्तर बहुत सहज है। आप खुद के belief हो (मान्यता) हो। आपने अपने को मान रखा है कि मैं ऐसा ही हूँ। मैं मूर्ख हूँ, मुझे कुछ नहीं आता, ये सारी बातें आपने अपना रखी हैं। कुछ लोगों की मान्यता है कि इच्छा-शक्ति (will power) ही belief है। शायद नहीं। उदाहरण के लिए आपकी इच्छा है कि मुझे एक ऑपरेशन करना है। दूसरा, स्टूडेन्ट अभी-अभी पास आऊट हुआ है मेडिकल कॉलेज से, उसकी इच्छा भी है कि मैं जाकर ऑपरेशन करूँ। तीसरा व्यक्ति ऐसा है, जिसे 15 साल का अनुभव है, लेकिन उसकी कोई इच्छा नहीं है। तो सभी प्रायिकता उसे ही देंगे जिसे आप अनुभवी मानते हैं। अनुभव हमें स्थिर बनाता है।

तो क्या करना है, या फिर क्या हुए आप? मान्यता या विश्वास (ज्ञान तथा अनुभव) हैं आप। जिसे भी ज्ञान है लेकिन अनुभव नहीं है, तो वह कैसे मानेगा कि आपको इस कार्य में महारत हासिल है। इसलिए तो लोग कहते हैं कि भगवान में आपका विश्वास है, तो उनका कहना उचित है कि नहीं, क्यों, क्योंकि अनुभव नहीं किया ना, और यदि अनुभव कर लिया तो कहेंगे हाँ, मेरा परमात्मा में विश्वास है। विश्वास आपके अंदर छुपे हुए ज्ञान व अनुभव से आता है। इसी को श्रीमद्भगवद् गीता में कहा गया है, कर्म किए जा भाई, फल की इच्छा ना कर। लेकिन लोगों का इसके विपरीत विचार होता है। अरे! फल मिलने का ही एक माध्यम है ज्ञान तथा अनुभव। अर्थात् योग्यता। भगवान ने कहा कि आप आत्मा हो, उसका ज्ञान लो तथा अनुभव करो। इसके बाद सारी चीज़ें आपके पास स्वत: ही आ जाएंगी।

तो अब क्या बदलेंगे आप? अब आप अपनी मान्यताओं और विश्वासों को बदलेंगे। जब तक आपका विश्वास नहीं बदलेगा तब तक कुछ नहीं बदलेगा। एक बात ध्यान देने योग्य है कि यदि मांगने से विश्वास बदलते तो सबसे शक्तिशाली विश्वास भिखारियों के होते। तो अपने आपको योग्य बनाना है। अब हमारा ध्यान खुद को बदलने में हो, न कि मान्यताओं को बदलने में! जीवन की परिस्थितियों को नहीं, दुनिया को नहीं, लोगों को नहीं, खुद को बदलने में। आप देखिए न कि, कितना विरोधाभासी है कि एक तरफ बात की जा रही है कृपा (gratitude) की, और दूसरी तरफ बात करते हैं मांगने की। दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं। अगर आपको भगवान से सुख मिला या नहीं मिला, दोनों अच्छा है क्योंकि दोनों में ही कृपा है, कल्याणकारी है। तो बस जाने दें। अब लोग कहेंगे इससे तो उन्नति ही नहीं होगी। नहीं, इससे उन्नति तो नहीं रुकेगी क्योंकि उन्नति और मांगना, ये दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं। आपको गाड़ी मिलेगी, घर मिलेगा लेकिन मांगने से नहीं मिलेगा, अपने आपको योग्य बनाने से मिलेगा। – क्रमश:

-ब्र.कु. अनुज,डिफेन्स कॉलोनी दिल्ली

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service
"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services
Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171

Smart Phone Service
Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in

Mobile Audio Service
Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day

अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना– ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-
Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

प्रश्न:- मैं एक छोटी ब्रह्माकुमारी हूँ, छोटी-छोटी बातों में उलझ जाती हूँ, व्यर्थ संकल्प तेज़ चलते हैं। छोटी परिस्थितियां भी बड़ी लगती हैं, संतुष्ट नहीं रह पाती। इन सभी बातों से छुटकारा पाने के लिए क्या पुरुषार्थ करें..?

उत्तर:- सबसे अच्छी बात है कि आपको अपनी स्थिति का ज्ञान है, जबकि अन्य कई तो स्वयं को ही राइट समझते हैं। नि:सन्देह यह स्थिति अति कमज़ोर स्थिति है। ऐसी स्थिति से तो कोई भी मनुष्य संतुष्ट नहीं रह सकता और ना ही उसका ये संगमयुगी जीवन सफल होता है।

स्वयं के विचारों को महान् बनाना है व योगबल से अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनानी है। स्वयं को एकरस व अचल-अडोल बनाने के लिए आँख खुलते ही ये संकल्प अन्तर्मन में कई बार भरें... मैं एक महान् आत्मा हूँ... मुझे भगवान मिल गये, मुझे संपूर्ण सत्य ज्ञान मिल गया, मैं तो सबकी उलझन मिटाने वाली हूँ...मैं शिव-शक्ति हूँ.... ये परिस्थितियां मेरे सामने कुछ भी नहीं है.... मैं तो त्यागी हूँ, तपस्वी हूँ। पहले 10 मिनट बार-बार ये संकल्प करें...इसे 21 दिन तक अवश्य करें।

सारे दिन में प्रति घंटे दो बार स्वमान याद करें... मैं महान आत्मा हूँ और मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ... इससे आपका चित्त शांत हो जायेगा। जितना-जितना स्वमान बढ़ेगा... आप बड़ी बनती जायेंगी व परिस्थितियां कमज़ोर पड़ती जायेंगी।

प्रश्न:- कई बार मुरली की धारणा करने में संकोच रहता है कि कहीं धारण कर, पूरा न कर सका तो... सौ-गुना पाप तो नहीं लग जायेगा। क्या धारणा की प्रतिज्ञा कर उसे पूरा न करने से ज़्यादा पाप, उसे बिल्कुल न धारण करने से लगता है? मैं डबल माईन्ड रहता हूँ कि धारणा करूं या न करूं?

उत्तर:- आपका स्वयं में संशय आपको शक्तिहीन कर रहा है। प्रतिज्ञा में बल होता है व परमात्म बल मिलता है। धारणा ही नहीं करेंगे तो पतित ही रह जायेंगे, पावन कभी भी नहीं बन पायेंगे। सौ-गुना पाप का भय हज़ार-गुना पाप कराता है। इसलिए इस विश्वास से सबकुछ धारण करो कि अब मुझे इस धारणा से कोई हटा नहीं सकता क्योंकि मेरे साथ परमात्म बल है।

धारणा के बीज को योग का पानी भी दो। बिना योग अभ्यास के बुद्धि शुद्ध नहीं

होती व बिना बुद्धि के शुद्ध हुए धारणा भी नहीं होगी। स्वयं भगवान का आना हुआ है, हम आत्माओं को सबकुछ धारण कराने। उसने ही कहा है, पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करो। सो करनी है। पहले ही प्रतिज्ञा टूटने का भ्रम नहीं पालना है। जितने दिन भी अच्छी धारणा रहेगी, उतना ही श्रेष्ठ भाग्य बनेगा। प्रतिज्ञा टूटने के भय से धारणा ही न करना अति कमज़ोर आत्मा की निशानी है, परन्तु आप तो मास्टर सर्व शक्तिवान हो।

प्रश्न:- मेरा एक 16 वर्षीय भाई है। मैं चाहता हूँ कि व संपूर्ण पवित्र बने, बुरे संग में आकर कलियुगी युवक न बनें, में उसे कैसे मदद कर सकता हूँ?

उत्तर:- आपके मन में आपके भाई के प्रति यह शुभ-भावना प्रशंसनीय है क्योंकि आजकल तमोप्रधान समय है, वातावरण ही तामसिक है, युवकों का उससे मुक्त रहना.. सहज काम नहीं है।

उसका पवित्र रहना, उस पर ही निर्भर करेगा। उसे ज्ञान-योग कितना अच्छा लगता है, उस पर सारा आधार है। फिर भी आप उन्हें ज्ञान दें, योगी बनायें और सात्विक भोजन खिलायें। घर के माहौल को सात्विक बनायें। घर में सत्य साहित्य ही हो। जब भी आप उसे देखें तो इस दृष्टि से देखें कि वो एक पवित्र आत्मा है, इससे उसे काफी मदद व बल प्राप्त होगा। हो सके तो प्रतिदिन उसे आधा घंटा योग का दान अवश्य दें।

प्रश्न:- भगवान को किसने बनाया और उसने ये ऐसा संसार क्यों बनाया? क्या इस दुनिया को देखकर भगवान को दु:ख नहीं होता, यदि होता है तो वह सबके दु:ख दूर क्यों नहीं करता? क्या सभी को दु:खी देखकर उसे मज़ा आता है?

उत्तर:- हमें पहले ये जानना चाहिए कि हमें किसने बनाया है? प्यारे बन्धु... आत्मा, परमात्मा व प्रकृति तीनों ही अविनाशी सत्ता हैं, इनका कोई निर्माण नहीं करता अत: यह प्रश्न ही गलत है। भगवान ने यह संसार नहीं बनाया। उसने जब यह संसार बनाया तो दुनिया स्वर्ग थी और मनुष्य देवता था, वहां दु:ख, अशांति शब्द ही नहीं थे, सबकुछ सम्पूर्ण था। अब जो दुनिया का हाल है, यह पांच विकारों के कारण हुआ है। दु:ख मनुष्य के पाप कर्मों का फल है। यह दु:खी संसार भगवान की नहीं, माया अर्थात् पांच विकारों की रचना है।

अपने वत्सों को दु:खी देखकर भगवान अब इस धरा पर आया है और वह सत्य ज्ञान दे रहा है। उसे पाकर ही दु:ख समाप्त हो जाता है। दूसरों के दु:खों में भगवान दु:खी नहीं होता, बल्कि उसे रहम आता है। आप भी उसका ज्ञान लेकर दु:खों से मुक्त हो जाओ। भगवान को यह दु:खी दुनिया देखकर मज़ा नहीं आता, वह तो दु:ख-हर्ता है, अब सबके दु:ख हरने आया है और महाविनाश के द्वारा इस दु:खी दुनिया को समाप्त कर देगा और धरा पर देव-युग का आरम्भ होगा।

प्रश्न:- कई लोग मोक्ष चाहते हैं, कोई मुक्ति के मुमुक्षु हैं। कोई कहते हैं कि आत्मा परमात्मा में लीन हो जायेगी तो कोई कहते हैं मुक्ति से लौटना पड़ेगा। कोई कहते हैं मुक्ति में हम परमात्मा के साथ रहते हैं, वहां परमानन्द है तो कोई कहते हैं कि वहां कोई अनुभूति नहीं है - सत्य क्या है?

उत्तर:- एक बार हमने किसी मुक्ति प्रेमी से पूछा कि आप मुक्ति क्यों चाहते हैं? तो बोले मुक्ति में हम परमात्मा के समीप परमानन्द में रहेंगे, इसलिए मुक्ति चाहते हैं। हमने पूछा कि आप तो कहते हो कि भगवान हमारे अन्दर ही है, तब उसे छोड़कर आप कहां उसके समीप जाओगे? बेचारे विचार मग्न हो गये। जबकि स्वयं भगवान को भी इस धरा पर आना पड़ता है अर्थात् उसे भी मोक्ष नहीं है, तब भला अन्य को मोक्ष कैसे मिलेगा? आत्मा एक्टर है, वह बिना एक्ट नहीं रह सकती और यदि आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाए तो आत्मा का अस्तित्व ही लोप हो जाए, जबकि आत्मा अविनाशी है उसका अस्तित्व सदा ही है। वास्तव में आत्मा मुक्ति में मुक्तिधाम में परमात्मा के पास ही रहती है, वहां क्योंकि आत्मा, शरीर रहित है, इसलिए उसकी मन और बुद्धि निष्क्रिय रहती है, यही कारण है कि वहां कोई अनुभव नहीं है, परन्तु सभी में दिव्य अनुभूति समाई रहती है। यदि किसी ने आम खाया ही न हो, तो वह कैसे बतायेगा कि आम कितना स्वादिष्ट है। यदि मुक्ति से कोई लौटकर ही न आता तो किसने बताया कि मुक्ति पाना सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। सत्य यही है कि सभी को मुक्ति से लौटना ही होता है, सबका मुक्ति काल भी अलग-अलग होता है। अब मुक्ति दाता स्वयं सभी को मुक्तिधाम ले जाने के लिए आया है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com